ईश्वर सम्पूर्ण न्यायशील और अत्यन्त दयालु है

- पापों की क्षमा के लिए ख़ुदा को अपने-आपको क़ुरबान करने की कोई आवश्यकता नहीं है और न ही कोई 'जन्म से पापी' है।
- ख़ुदा हर एक का फ़ैसला उसके कर्मों के आधार पर करेगा और हर एक अपने कर्मों के प्रति उत्तरदायी है।
- कोई भी इनसान दूसरे इनसानों से उच्च हो सकता है और ख़ुदा की रज़ा हासिल कर सकता है तो केवल अपने ईमान, नेकी और पवित्रता के आधार पर न कि जाति, धन और सामाजिक वर्ग के आधार पर।

केवल अल्लाह ही पूज्य-प्रभु है

''और अल्लाह की उपासना करो और उसके साथ किसी को साझी न ठहराओ।'' (क़ुरआन,4:36)

इस्लाम की शिक्षा है कि पूजा और अर्चना के सभी काम केवल एक ख़ुदा के लिए होने चाहिएँ। उसके अतिरिक्त कोई और पूजा के योग्य नहीं है। न कोई मूर्ति , न क़ब्र, न सूरज, न चाँद, न जानवर, न नबि, न सन्त, न फ़रिश्ता न कोई साधु या धर्म गुरु। इन सभी चीज़ों को पैदा किया गया है और इनकी अपनी सीमाएँ हैं और ये सब अपूर्ण हैं जब्कि अल्लाह सम्पूर्ण और हर दोष से मुक्त।

ख़ुदा की उपासना के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं

ख़ुदा को किसी साझीदार या मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं है। ख़ुदा की पूजा-उपासना के लिए कोई भी व्यक्ति उससे सीधे सम्पर्क कर सकता है, क्योंकि वह हर उस व्यक्ति की सुनता है जो उसे पुकारता है। किसी को माध्यम (जैसे मूर्तियों, प्रतिमाओं आदि को मध्यस्थ) बनाकर ख़ुदा की पूजा करना इस बात को दर्शाता है कि अल्लाह के एक होने और उसकी विशुद्ध पूजा में समझौता कर लिया गया है जब्कि केवल वही एक अकेला पूजा और इबादत के लायक़ है।

सभी पैग़म्बरों ने एक ही ख़ुदा की पूजा करने की ओर बुलाया

''हमने हर जाति में एक रसूल भेजा और उसके द्वारा सबको सूचित कर दिया कि 'अल्लाह की उपासना करो और बढ़े हुए अवज्ञाकारी (ताग़ूत) से बचो।''
(क़ुरआन, 16:36)

ख़ुदा की तरफ़ से भेजे गए सभी नबियों पर मुसलमान ईमान रखते हैं। इन नबियों में हज़रत आदम, नूह, इबराहीम, मूसा, ईसा और मुहम्मद (इन सब पर ईश्वर की ओर से शान्ति हो) शामिल हैं। ये सभी पैग़म्बर एक ही पैग़ाम लेकर आए कि वे अपनी क़ौम को एक सच्चे ख़ुदा की उपासना की ओर बुलाएँ।

इनसान के ज़ीवन का उद्देश्य एक ख़ुदा की उपासना है

मानव जीवन का मूल उद्देश्य ईश्वर की महानता को पहचान्ना उसके साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित करना और उसी एक अकेले की उपासना करना है।

इस्लाम में इबादत की धारणा केवल कुछ रस्मों को अदा कर लेने तक सीमित नहीं है, जैसे नमाज़पढ़ना और उपवास रखना इत्यादि, बल्कि इसमें वे सब काम शामिल हैं जिनसे ख़ुदा ख़ुश होता है जैसे अच्छे तौर-तरीक़े अपनाना, ईमानदार होना, न्याय की स्थापना करना, धैर्य से काम लेना और ज़रूरतमंदों की मदद करना इत्यादि।

सारांश यह कि इस्लाम की बुनियाद उस एक और अकेले सर्वशक्तिमान ख़ुदा पर ईमान लाना है, जो सबका मालिक और पैदा करनेवाला है और अपने गुणों में सम्पूर्ण है। वही अकेला इस योग्य है कि उसकी बन्दगी की जाए। इसी में हमारी इस जीवन की और इसके बाद आनेवाले जीवन की सफलता निहित है।

ईमानवालों (मुसलमानों) का आचार-व्यवहार

मुस्लिम (किसी का ख़ुदा के सामने समर्पण) होने के लिए, ज़रूरी है कि वह एक ख़ुदा पर ईमान लाए, इस बात पर ईमान लाए कि वही पैदा करनेवाला , सुरक्षा करने वाला और पालनेवाला है। लेकिन इस बात पर ईमान लाने का मतलब यह है कि वह इस तथ्य को भी समझें कि वही एक अकेला उपासना के योग्य है और इस प्रकार अपने आपको किसी अन्य की पूजा -उपासना करने से रोके।

एक सच्चे ख़ुदा के बारे में जानकारी प्राप्त करके इनसान को चाहिए कि इस ईमान को स्थिर बनाए रखें और कोई भी चीज़ उसे इस सच्चाई का इनकार करने के लिए प्रेरित न करे। जब सच्चा विश्वास इनसान के दिल में घर जाता है तो इसका इज़हार उसकी बाहरी ज़िन्दगी और उसके व्यवहार में होता है। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) ने कहा, 'ईमान वह है जो इनसान के दिल में मजबूती के साथ बैठ जाता है और फिर कर्म से उसका इज़हार होता है।''

ईमान का एक और हैरत अंगेज़ नतीजा यह है कि उसके अन्दर ख़ुदा की शुक्रगुज़ारी (कृतज्ञता) की भावना पैदा हो जाती है, जो कि बन्दगी का सार (Essence) है। शुक्रगुज़ारी की भावना इतनी महत्त्वपूर्ण है कि जो व्यक्ति इस सच्चाई का इनकार करे वह 'काफ़िर' (ईश्वर का इनकार करनेवाला) है। एक ईमानवाला ख़ुदा से प्रेम करता और अल्लाह की ओर से मिलने वाले इनाम पर उसका शुक्रगुज़र होता है। वह इस बात से अवगत होता है कि उसके अच्छे कर्म उसकी अनुकम्पाओं और नेमतों के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं है, इसलिए वह हर समय अल्लाह को ख़ुश रखने के लिए बेचैन रहता है। वह सर्वदा ख़ुदा को याद करता रहता है। ख़ुदा के गुणों को बार-बार दोहराकर शुक्र की इस भावना को और प्रोत्साहित करता है। वह कहता है।

'अल्लाह, वह जीवित और शाश्वत सत्ता, जो सम्पूर्ण जगत को सँभाले हुए है, उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं है। वह न सोता है और उसे ऊँघ लगती है। ज़मीन और आसमानों में जो कुछ है उसी का है। कौन है जो उसके सामने उसकी अनुमति के बिना सिफ़ारिश कर सके। जो कुछ बन्दों के सामने है उसे भी वह जानता है और जो कुछ उनसे ओझल है, उसे भी वह जानता है और उसके ज्ञान में से कोई चीज़उनके ज्ञान की पकड़ में नहीं आ सकती, यह और बात है कि किसी चीज़का ज्ञान वह ख़ुद ही उनको देना चाहे। उसका राज्य आसमानों और ज़मीन पर छाया हुआ है और उनकी देख-रेख उसके लिए कोई थका देनेवाला काम नहीं है। बस वही एक महान और सर्वोपरि सत्ता है।''
(क़ुरआन, 2:255)

हमसे सम्पर्क करें
इस्लामिक इन्फ़ॉरमेशन सेंटर
IIC
www.discovertruepath.com
You Tube : DiscoverTruePath

इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने हेतु सम्पर्क करें

Toll Free 1800 572 3000
040 - 6832 7832
www.discovertruepath.com
You Tube : DiscoverTruePath

क्या ख़ुदा है ?

ख़ुदा पर ईमान लाने के लिए बहुत से तार्किक कारण हैं। उनमें से निम्न लिखित तीन हैं-

१-ब्रह्माण्ड की व्यवस्था

कल्पना कीजिए कि समुद्र के किनारे टहलते हुए आपको रेत में एक घड़ी मिल जाती है। क्या आप विश्वास करेंगे कि वह घड़ी अपने-आप बन गई होगी- आप कभी भी यह नतीजा नहीं निकाल सकते कि घड़ी अचानक रेत से निकल कर आ गई होगी घड़ी के सभी हिस्से धरती में दफ़न धातुओं से स्वयं विकसित नहीं हो सकते। निश्चित रूप से घड़ी का बनानेवाला कोई है। और यदि घड़ी समय सही बताती है तो हम अनुमान करते हैं कि वह बनानेवाला बुद्धिमान भी होगा । किसी प्राकृतिक आकस्मिक घटना से चालू घड़ी अपने-आप नहीं आ सकती।

पृथ्वी पर विचार कीजिए । यह इतने अनुशासित ढंग से सूर्य के चारों ओर चक्कर लगा रही है कि वैज्ञानिक सूरज के निकलने और डूबने का समय पहले से ही प्रकाशित कर देते हैं । जिस तरह घड़ी में सही समय बताना घड़ी के बनाने वाले की अपेक्षा करता है उसी प्रकार धरती का, सूर्य के चरों ओर समय के निर्धारण से घूमना इस बात कि अपेक्षा करता है कि धरती का भी कोई बनानेवाला ज़रूर है। ज़रा सोचिये क्या यह सब कुछ ख़ुदा के बग़ैर होसकता है ?

बिल्कुल इसी तरीक़े से जब हम अपने अन्दर और पूरे विश्व की सुव्यवस्था, सुनिश्चित क़ानून और प्रबन्ध को देखते हैं तो क्या यह बात समझ में नहीं आती कि इसका भी कोई प्रबन्धक है? इसी 'प्रबन्धक' की व्याख्या ईश्वर के अस्तित्व के रूप में इस तरह की गई है कि वही अकेला है जिसने इस विश्व को बनाया है।

२. विश्व की उत्पत्ति

आधुनिक विज्ञान इस नतीजे पर पहुँचा है कि इस विश्व की उत्पत्ति हुई है। यह बात आधुनिक युग की उस खोज पर आधारित है जिसमें कहा गया है कि इस विश्व का विस्तार हो रहा है। अब यदि हम कुछ समय पहले की बात करें तो सवाल पैदा होता है कि यह बिन्दू कौन-सा है जहाँ से इस विश्व का आरम्भ हुआ? विश्व के आरम्भ के सम्बन्ध में तीन बातें सम्भव हो सकती हैं वह यह कि..

मानव अनुभव यह बताता है कि जिस किसी वस्तु का आरंभ या शुरूआत हो उसकी शून्य से उत्पत्ती नहीं होती ।

1) विश्व का आरम्भ शून्य से हुआ, या
2) विश्व का आरम्भ स्वयं ही हो गया, या फिर
3) इस विश्व को योजनाबद्ध प्रकार से बनाया गया है।

जहाँ तक दूसरी बात का सम्बन्ध है, तो सामान्य बुद्धि भी यह बात बताती है कि कोई भी चीज़ अपने अस्तित्व से पहले कुछ नहीं कर सकती ।

इससे यह बात मालूम होती है कि तीसरी बात ही वास्तव में बुद्धिसंगत है कि उच्चतम और बुद्धिमान ख़ुदा ने इस विश्व की रचना की है।

कुछ लोग कह सकते हैं कि 'ख़ुदा को किसने पैदा किया'? ईश्वर, सृष्टिकर्ता, अपनी रचना से भिन्न है। यदि वह अपनी रचना के समान ही होता, तो फिर उस को भी सृष्टा की आवश्यकता होती और फिर अनंत सृष्टाओं की आवश्यकता होती जो कि सम्भव नहीं है। वह समय की सीमा और कायनात के भौतिक तत्व से महान है। ख़ुदा वह है जो हमेशा से है, उसका कहीं से आरंभ नहीं है, इसलिए यह सवाल कि ख़ुदा को किसने पैदा किया अबुद्धिसंगत और अतार्किक है।

३. ख़ुदा की ओर से अवतरण

इस बात के स्पस्ट संकेत हैं कि क़ुरआन, ईश्वरीय वाणी है । नीचे इस बात का सारांश प्रस्तुत किया जा रहा है जिससे इस दावे का समर्थन होता है कि यह ईश्वरीय वाणी है।

यदि कोई पुस्तक मानव जाति के मार्गदर्शन के लिए ईश्वर की ओर से अवतरित हुइ है तो उससे इस बात की आशा की जाएगी कि इसमें ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में स्पष्ट प्रमाण होंगे ।

- - क़ुरआन आज से लगभग साढ़े चौदह सौ साल पहले ईश्वर की ओर से अवतरित हुआ, जिसमें बहुत-से ऐसे वैज्ञानिक तथ्य पाए जाते हैं जिनके बारे में उस समय के लोगों को बिल्कुल ज्ञान नहीं था, बल्कि उनकी खोज आज के आधुनिक वैज्ञानिक समय में की गई है। उदाहरण के रूप में एक यह बात कि जीवन की उत्पत्ति पानी से हुई है। (क़ुरआन 21:30),
- यह कायनात निरन्तर फैल रही है। (क़ुरआन 51:47) सूरज और चाँद दोनों अपनें अपनें कक्ष में घूम रहे हैं। (क़ुरआन 51:33)
- बहुत-से ऐतिहासिक तथ्य हैं जिनसे लोगों को क़ुरआन ने परिचित कराया। इसी के साथ-साथ बहुतसी भविष्यवाणियाँ क़ुरआन ने ऐसी कीं जो बाद में सच्ची सिद्ध हुई ।
- क़ुरआन अन्तर्विरोध और ग़लतियों से शुद्ध है।
- दूसरे धर्म ग्रन्थों के विपरीत, जो कि अपनी असली रुप में नहीं रहे, क़ुरआन का एक-एक शब्द मूल अरबी भाषा में अपने अवतरण काल से लेकर आजतक सुरक्षित है।
- क़ुरआन का सादा, शुद्ध और सार्वभौमिक सन्देश सर्वशक्तिमान ईश्वर के सम्बन्ध में मनुष्य की जन्मजात धारणा को आकर्षित (Appeal) करता है।
- क़ुरआन पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) पर अवतरित हुआ जिनको इतिहास में निरक्षर जाना जाता है। लेकिन फिर भी क़ुरआन की भाषा -शैली की बिनापर इसे सारी दुनिया में अरबी वाक्पटुता की पराकाष्ठा और भाषा- विज्ञान की सुन्दरता के रूप में जाना जाता है।

अद्भुत और चमत्कारी पहलुओं में सबसे अधिक तर्कसंगत पहलू यही है कि यह ईश्वर की ओर से है

ईश्वर कौन है ?

और तुम्हारा ख़ुदा एक ही ख़ुदा है। उस करुणामय और दयावान के सिवाय कोई और ख़ुदा नहीं है। (क़ुरआन 2:163)

'अल्लाह'एक सच्चे ख़ुदा का व्यक्तिवाचक नाम है। किसी और चीज़को 'अल्लाह' नहीं कहा जा सकता । अंग्रेज़ी में अल्लाह के लिए प्रयुक्त शब्द God का बहुवचन (Gods) भी है और स्त्रीवाचक (Goddess) भी, जब्की इसके विपरीत शब्द 'अल्लाह' का न कोई बहुवचन है और न ही स्त्रीवाचक या पुरुषवाचक । 'अल्लाह' नाम का अनुपम प्रयोग इस बात को प्रदर्शित करता है कि इस्लाम ने एक ख़ुदा में विश्वास की शुद्धता पर कितना बल दिया है।

इस्लाम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें एक अल्लाह की सम्पूर्णता, महानता और अद्वितीयता को नित्यंत स्वीकार करने में किसी प्रकार का कोई समझौता नहीं किया गया है। इससे इस्लाम की ख़ुदा के गुणों के बारे में शुद्ध शिक्षाओं पर प्रकाश पड़ता है।

ईश्वर एक है, उस जैसा कोई नहीं

- ख़ुदा का कोई साझीदार नहीं, न उसके बराबर कोई है और न उस जैसा कोई और ।
- ख़ुदा का न कोई पिता है न माता, न उसके बेटे हैं न बेटियाँ और न ही उसकी पत्नियाँ ।
- सिर्फ़ एक वही ख़ुदा है जो पूजा और उपासना के योग्य है।
- यदि एक से अधिक ख़ुदा होते तो इससे उसकी शक्ति और अधिकार में कमी प्रकटित होती, क्योंकि इस तरह उसके प्रतिद्वन्द्वी होते, फिर कहीं न कहीं उसे दूसरे ख़ुदाओं के साथ समझौते और आवश्यकतानुसार सन्धियाँ करनी पड़तीं'

ईश्वर सर्वशक्तिमान है

- खुदा को समस्त चीज़ों पर प्रभुत्व और अधिकार प्राप्त है।
- हर एक चीज़ उस के आधीन और उस पर निर्भर है।
- ख़ुदा कि आज्ञापालन से उसकी शक्ति में न तो कोई वृद्धि हो सकती है और न उसकी नाफ़रमानी से उसमें किसी प्रकार की कोई कमी आ सकती है।

ईश्वर की सत्ता सर्वोच्च है

- न तो ईश्वर से कोई उच्च है न उसके समतुल्य।
- किसी के गुण ईश्वर की रचना के गुणों के बराबर नहीं है।
- किसी वस्तु या मनुष्य में ईश्वर का कोई अंश नहीं है।
- ईश्वर सम्पूर्ण है और मनुष्य कि जैसे गुणों और सीमाओं के बन्धन से मुक्त है, जैसा कि विश्व कि रचना करने के बाद सातवें दिन उसके आराम करने कि बात कुछ दूसरी किताबों में कही गई है। इस तरह कि बातोंसे परिशुद्ध है।